यशोधरकृत अभिज्ञानशकुन्तल-टीका – एक अभ्यास

भारती ए. पटेल

व्याख्याता सहायक, एम. एन. कोलेज, विसनगर

भूमिका

महाकवि कालिदास रचित अभिज्ञानशाकुन्तल नाटक संस्कृत नाट्य-साहित्य की सर्वश्रेष्ठ कृति है। इस नाटक का पाठ विभिन्न फलकों पर, विभिन्न लिपियों में लिखी हुई पाण्डुलिपियों में संचरित होता हुआ हम तक पहुँचा है। इन पाण्डुलिपियों में उपलब्ध हो रहा पाठ सर्वत्र एकरूप नहीं है। स्थल-काल के अनुसार इस नाटक के मूलपाठ में निरंतर परिवर्तन होते रहे है। परिणामतः आज उपलब्ध हो रहा शाकुन्तल का पाठ पाँच वाचनाओं में विद्यमान है – 1. देवनागरी, 2. दाक्षिणात्य, 3. कश्मीरी, 4. मैथिली एवं 5. बंगाली। इन पाँचों वाचनाओं में भी दो प्रकार का पाठ प्रवहमान है – 1. बृहत्पाठ एवं 2. लघुपाठ। इनमें से देवनागरी और दाक्षिणात्य वाचना में लघुपाठ मिलता है और कश्मीरी, मैथिली एवं बंगाली में बृहत्पाठ चल रहा है। इन पाँचों वाचनाओं के पाठ का आधार लेकर टीकाकारों ने टीकाएँ भी लिखी है। प्राप्त सूचनानुसार देवनागरी वाचना पर राघवभट्ट की "अर्थद्योतनिका" टीका, दाक्षिणात्य वाचना पर काटयवेम की "कुमारगिरिराजीया" टीका, धनश्याम की "सञ्जीवन-टिप्पण", श्रीनिवासाचार्य की "शाकुन्तलव्याख्या", नीलकण्ठ की टीका, अभिराम की "दिङ्मात्रदर्शना" टीका, अज्ञातकर्तृक "चर्चा" टीका, नारायण पण्डित की "प्राकृत-विवृति" एवं मैथिली वाचना पर शंकर की "रसचन्द्रिका" टीका और नरहरि की "अभिज्ञानशकुन्तल-टिप्पण" आज हमें प्रकाशित रूप में प्राप्त है। बंगाली वाचना पर लिखी गई एक भी टीका अद्यावधि प्रकाशित नहीं हुई है। इस वाचना पर चन्द्रशेखर चक्रवर्ती की "सन्दर्भदीपिका" टीका (इस टीका का सम्पादन कार्य डो. वसन्तकुमार भट्ट कर रहे है।[1]), न्यायाचार्य की "रसिकमनोहरा" टीका एवं यशोधर की टीका प्राप्त है, जो पाण्डुलिपियों के रूप में हमारे देश में और विदेश में संगृहीत है। प्रस्तुत शोधालेख में बंगदेशीय विद्वान् श्रीयशोधर के द्वारा विरचित अभिज्ञानशकुन्तल की टीका का परिचय दिया जाता है।

टीका ग्रन्थों की उपयोगिता – संस्कृत साहित्य की विभिन्न कृतियों पर प्राचीन समय से टीका-टिप्पणादि का प्रणयन होता रहा है। किसी भी कृति के मूलपाठ का निर्धारण करने के लिए ये टीकाग्रन्थ महत्त्वपूर्ण है। टीकाओं के माध्यम से हम कृति के प्राचीनतम पाठ तक पहुँच सकते है। क्योंकि किसी भी कृति की आज उपलब्ध हो रही पाण्डुलिपि दो सो या तीन सो साल से अधिक पुरानी नहीं है। जबकि टीकाकारों ने तो इन पाण्डुलिपियों से अधिक प्राचीनतर काल में टीकाएँ लिखी हो सकती है। अतः टीकाग्रन्थों का मूल्य बहुत अधिक है और उसका सम्पादन-कार्य नितान्त आवश्यक है।

अभिज्ञानशाकुन्तल की बंगाली वाचना की समीक्षित आवृत्ति सर्वप्रथम डॉ. रिचार्ड पिशेल ने प्रकाशित की थी। उसके बाद डॉ. दिलीपकुमार काञ्जीलाल ने भी बंगाली वाचना के समीक्षित-पाठ को प्रकाशित किया है। उन्होंने इस कार्य में बंगाली वाचना पर लिखी गई टीकाओं का भी विनियोग किया था। बंगाली वाचना पर लिखी गई यशोधर की टीका

[1]. आज जब यह लेख छप रहा है तब ये टीका प्रकाशित हो चुकी है।

भी अप्रकाशित है, इसलिए इसके सम्पादनकार्य (प्रस्तुत लेख में प्रथम अङ्क की टीका का ही परिचय दिया गया है ।) पर ध्यान केन्द्रित किया है ।

पाण्डुलिपि का विवरण

टीकाकार यशोधर द्वारा प्रणीत अभिज्ञानशाकुन्तल की टीका की यह पाण्डुलिपि संस्कृत विद्यालय-सरस्वतीभवन, वाराणसी से प्राप्त की गई है । इसका क्रमांक – 75876 है । इस पाण्डुलिपि का फलक कागज है । इसके फलक का आकार 12.1×3.3 ईंच है । इसका लेखनकार्य बंगलिपि में हुआ है । इस पाण्डुलिपि में कुल मिला के 18 पत्र है । इसमें प्रत्येक पृष्ठ पर 9 पङ्क्तियाँ लिखी हुई है, तथा प्रत्येक पङ्क्ति में प्रायः 70 से 75 अक्षर लिखें है । यह पाण्डुलिपि सुवाच्य अक्षर में लिखी गई है । यशोधरकृत यह टीका अपूर्ण है । इसमें एक से तीन अंक तक की ही टीका मिलती है, जिसमें तीसरा अंक भी पूर्ण नहीं है । रिचार्ड पिशेल के बंगाली वाचना के पाठानुसार देखे तो तीसरे अङ्क के अप्यौत्सुक्य महति (3-27) श्लोक तक की ही यशोधर की यह टीका हमें प्राप्त हुई है ।

लिपिकार द्वारा दी गई सूचनायें

इस टीका का लहिया कौन है, वह ज्ञात नहीं है । इसका समय भी अज्ञात है । यह टीका अपूर्ण है, इसके कारण उसके अन्त में लिखी गई पुष्पिका प्राप्य नहीं है पर प्रथम और द्वितीय अङ्क की पुष्पिका में निम्नोक्त सूचनायें प्राप्त होती है– इस टीका के प्रथम अंक के अन्त में, पुष्पिका में 'इति शाकुन्तल टीकायां प्रथमोऽङ्कः ।' ऐसा लिखा हुआ है । द्वितीय अंक की पुष्पिका इस प्रकार है– "इति महामहामहोपाध्याय-श्रीयशोधरकृतावभिज्ञानशकुन्तलटीकायां द्वितीयोऽङ्कः।" द्वितीय अङ्क की इस पुष्पिका से हमें ज्ञात होता है कि, इस टीका के टीकाकार 'श्रीयशोधर' है । यहाँ प्रथम और द्वितीय अंक के अन्त में दी गई पुष्पिका में कृति का शीर्षक "शाकुन्तल" और "शकुन्तल" ऐसे दो प्रकार का दिया गया है । प्रथम अंक के आरम्भ में 'अभिज्ञानशकुन्तल' ऐसा नामाभिधान ही दिया है – "अस्यां परिषदि कालिदासः कविविशेषः प्रसिद्ध एव । उत्तम्भित(?) नर्त्तकी येन अभिज्ञानशकुन्तलनाम्ना अभिज्ञानेन लब्धा या शकुन्तला यत्र नाटकेन उपस्थास्ये ।" वस्तुतः ज्ञात होता है कि यशोधर ने कृति का शीर्षक "अभिज्ञानशकुन्तल" ऐसा स्वीकारा है । नायक के नाम में भी यहाँ भिन्नता दिखाई देती है, जैसे- दुष्मन्त, दुष्सन्त, दुःसन्त इत्यादि । रिचार्ड पिशेल एवं दिलीपकुमार कांजीलाल ने "दुःषन्त" ऐसे नाम का स्वीकार किया है । मूल महाभारत के शकुन्तलोपाख्यान में भी "दुःषन्त" ऐसा नामाभिधान हुआ है । "दुष्मन्त" ऐसा नामकरण मैथिली वाचना में पाया जाता है ।

लिपिकार के लेखन में यहाँ कुछ विशेषतायें दिखाई देती है, जैसे –

- यहाँ कुछ संयुक्ताक्षरों के लेखन में प्राचीनता दिखाई पडती है । तद्यथा – ङ्क, ङ्ग, ज्ञ, अवग्रह, त्य, न्य, द्य, इत्यादि। क वर्ण के साथ उकार की मात्रा लगने से क वर्ण का स्वरूप ही बदला हुआ दिखाई पडता है ।
- वकार एवं रेख के लेखन में बिन्दी के चिह्न से स्पष्टता लाई जा सकती थी, जो यहाँ नहीं है । इस तरह लकार एवं नकार के लेखन में भी कई जगह पर समानता नजर आती है, जिससे बंगलिपि के वर्णों के लेखन में लिपिकार की असावधानी दिखाई देती है । अकार के लेखन में भी यहाँ भिन्नता दिख रही है ।
- यहाँ रेफ के साथ आनेवाले वर्ण को प्रायः द्वित्व करके लिखा गया है, जैसे - र्य्य, र्व्व, र्ज्ज, र्ण्ण, इत्यादि ।

यशोधर की टीका का विश्लेषण

टीकाकार यशोधर ने बंगाली वाचना के पाठ को लेकर टीका लिखी है । टीका के आरम्भ में परम्परानुसार ग्रन्थ की निर्विघ्न समाप्ति के लिए मङ्गल किया गया है । टीका का आरम्भ इसप्रकार से होता है –"ॐ नमो लम्बोदराय। बहुरूपाय शान्ताय पराय परमात्मने ।
नमोस्तु गिरिजास(श)ङ्कररङ्गसङ्गीत शालिने ।।

अभिमत ग्रन्थारम्भे स्वसमीहितसिद्धये महेश्वरस्तुतिरूप मङ्गलं निबध्नाति । या स्रष्टुरित्यादि ।"

टीकाकार ने नान्दी, प्रस्तावना एवं कुछ रंगसूचनाओं के लक्षणों को नाट्यशास्त्रीय परिभाषाओं से विशद किया है । उसके लिए कुछ ग्रन्थों एवं ग्रन्थकारों के निर्देश यहाँ पर मिलते है । भरत, विश्व, नाट्यलोचन आदि का उल्लेख किया है । जैसे कि नान्दी का लक्षण बताते हुए वें लिखते है –

"देवद्विजनृपादीनामाशीर्वचनपूर्विका ।
नन्दत्यत्र यु(दे)वा यस्मात्तसमान्नान्दी प्रकीर्त्तिता ।।"

नाट्यशास्त्रकार भरत ने नान्दी का जो लक्षण दिया है, वह इस प्रकार है –

यदाह भरतः – "सूत्रधारः पठेत्तत्र मध्यमं स्वरमास्थि(श्रि)तः ।
नान्दीं पदैर्द्वादशभिरष्टभिर्व्याप्यलङ्कृताम् ।।"

टीकाकार ने प्रस्तावना की भी यहाँ विस्तार से चर्चा की है । प्रस्तावना के पाँच भेदों का निर्देश करके यहाँ पर अवलगिति प्रकार की प्रस्तावना है ऐसा निर्देश किया है । साथ ही में अवलगिति का लक्षण भी दिया है, जैसे – "उद्घातकः कथोद्घातः प्रयोगातिशयस्तथा ।
प्रवर्त्तकावलगिति पञ्चप्रस्तावना भेदाः ।।" इयन्तुवलगिति ।

अत्र अवलगितेन पात्रप्रवेशः लक्षणम् – "यथा यत्रैकार्थसमावेशात् कार्यमन्यत् प्रसाध्यते ।
प्रयोगे खलु तज्ज्ञेयं नाम्नावलगितं बुधैरिति ।"
"नटीविदूषको वाऽपि पारिपार्श्विक एव वा ।
सूत्रधारेण सहिताः संलापं यत्र कुर्वते ।।
चित्रैर्वाक्यैः स्वकार्याण्यैः प्रस्तुताक्षेपिभिर्मिथः ।
आमुखं तत्तु विज्ञेयं नाम्ना प्रस्तावनापि सा ।।"

जनान्तिकमम् एवं आत्मगतम् जैसी रंगसूचनाओं को भी टीकाकार ने यहाँ परिभाषाओं से स्पष्ट किया है । जैसे – "त्रिपताकेन हस्तेन संज्ञया यदुदीर्यते ।
बहुनां पुरतो वाक्यं तज्जनान्तिकमुच्यते ।।"
"भाषितं हि द्विविधं नाट्ये श्राव्यमश्राव्यमेव च ।
सर्वः श्राव्यं प्रकाशः स्यादश्राव्यं स्वगतं मतमिति ।।"

आयुष्मन् शब्द पर टीका लिखते है तब उसका अर्थ स्पष्ट करने के लिए टीकाकार ने नाट्यलोचन का निर्देश दिया है । जैसे–"आयुष्मनिति राजानं प्रति सारथेः सम्बोधनम् । तथा च रथी सारथिना राजानमायुष्मानिति सर्वदेति नाट्यलोचनम् ।" अम्मो शब्द की व्याख्या इस प्रकार दी है –अम्मो इति आश्चर्यम् । अम्मो शब्दो देशीय आश्चर्यवचनम्। विस्मये अस्म हे अम्मो नित्यं स्त्रीभिः प्रयुज्यत इति भरतः ।

टीकाकार ने इस टीका में व्याकरण की भी चर्चा कि है । उन्होंने पदो के समास, विभक्ति इत्यादि का निर्देश भी दिया है । जैसे – प्रथमाङ्क में प्रतिपात्रं शब्द का समास स्पष्ट करते है । प्रतिपात्रमिति । सप्तम्यर्थेऽव्ययीभावः । तथा च पात्रे पात्रे इत्यर्थः । इसी प्रकार विनीतवेषः शब्द के समास का भी विग्रह देकर समझाया है – विनीतो वेषो यस्येति बहुव्रीहिः । टीकाकार 'किमन्यदस्याः परिषदः श्रुतिप्रसादहेतोर्गीतादनन्तकरणीयमस्ति ।' पर व्याख्या करते समय हेतु शब्द को समझाते हुए लिखते है – प्रसादहेतोरिति । हेतुशब्दस्य पुलिङ्गतया गीतविशेषणत्वेपि नपुंसकविहितत्वा प्रसङ्गः । यद्वा हेतोरिति षष्ठी ।

टीकाकार ने यहाँ अलङ्कार का भी विनियोग किया है । जैसे – कृष्णसारे(1-6) श्लोक में दुष्यन्त के वर्णन में उपमा अलङ्कार दर्शाया है । दक्ष प्रजापति के यज्ञ में जब यज्ञ मृग बनकर भाग रहा था तब भगवान शिव पिनाक धनुष लेकर उसके पीछे दौडे थे । पुराण के इस सन्दर्भ को उद्धृत कर टीकाकार ने जो उपमा अलङ्कार का निर्देश किया है, ऐसा पहले किसी और टीकाकार ने नहीं किया है । ग्रीवाभङ्गाभिरामं(1-7) में हिरण के वर्णन में स्वभावोक्ति अलङ्कार का निर्देश किया है । चलापाङ्गां(1-23) श्लोक में भ्रमर के वर्णन में व्यतिरेक अलङ्कार दर्शाया है ।

टीकाकार यशोधर ने शब्दों के अर्थों को स्पष्ट करने के लिए यहाँ भिन्न भिन्न कोशो का भी निर्देश दिया है । जैसे – प्रथमाङ्क में क्षणचुम्बितानि(1-4) श्लोक में आये शिरीष शब्द का अर्थ स्पष्ट करने के लिए उन्होंने अमरकोश का उद्धरण दिया है – "शिरीषस्तु कपीतन इत्यमरः ।" इसी प्रकार नवमालिका शब्द को समझाने के लिए लिखा है – "नवमालिका जातिः सप्तला नवमालिका इत्यमरः ।" सरसिजमनुविद्धं(1-20) श्लोक में कमल के वर्णन में आये शैवाल शब्द की व्याख्या में भी अमरकोश का उद्धरण दिया है – "जलनीली तु शैवालमित्यमरः ।"

इस प्रकार यशोधर ने अपनी टीका में विविध ग्रन्थों एवं ग्रन्थकारों का विनियोग किया है और आवश्यकतानुसार उसके उद्धरण भी दिये है ।